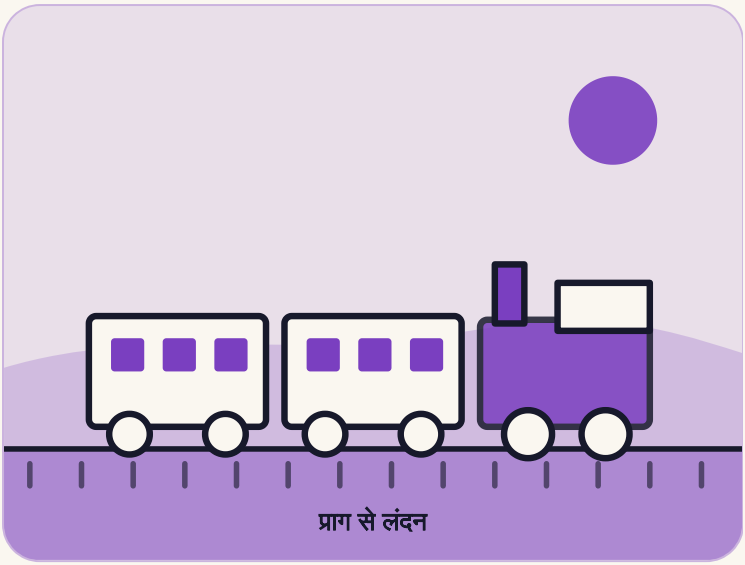

प्राग से लंदन

ब्रिटेन

अटारी में रखी स्क्रैपबुक

50 साल तक निकोलस विंटन ने किसी को नहीं बताया कि उन्होंने 669 बच्चों को बचाने में मदद की थी। फिर उनकी पत्नी को एक स्क्रैपबुक मिली।

कहाँ मेडनहेड और प्राग

कौन निकोलस विंटन, लंदन के एक शेयर-दलाल, जिन्होंने चेकोस्लोवाकिया के बच्चों को बचाने में मदद की

कब 1938 से 2015

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

1988 में इंग्लैंड के मेडनहेड में ग्रेटे नाम की एक औरत अपनी अटारी साफ़ कर रही थी। उसे एक पुरानी स्क्रैपबुक मिली। उसमें बच्चों की तस्वीरें और नामों की सूचियाँ भरी थीं। वह उनमें से किसी को नहीं जानती थी।

उसने अपने पति निकोलस विंटन से उसके बारे में पूछा। उन्होंने उसे वह बात बताई जो उन्होंने कभी नहीं कही थी। पचास साल पहले उन्होंने 669 बच्चों को बचाने में मदद की थी।

प्राग, 1938

1938 के आख़िर में विंटन लंदन में शेयर-दलाल थे। उन्होंने स्की की छुट्टी की योजना बनाई थी। फिर एक दोस्त ने उन्हें चेकोस्लोवाकिया के प्राग आने को कहा, यहूदी परिवारों की मदद के लिए। नाज़ी जर्मनी उस देश पर क़ब्ज़ा करने वाला था।

विंटन को ऐसे शिविर मिले जो उन परिवारों से भरे थे जो अपने बच्चों को सुरक्षित भेजना चाहते थे। ब्रिटेन 17 साल से छोटे बच्चों को लेता था। लेकिन हर बच्चे के लिए एक घर और 50 पाउंड का वादा चाहिए था। किसी को घर और पैसा जुटाना था।

विंटन प्राग में लगभग तीन हफ़्ते रहे। उन्होंने अपने होटल के कमरे में बच्चों के नाम लिखे। लंदन लौटकर उन्होंने शामें और छुट्टियाँ पालक परिवार ढूँढने और पैसा जुटाने में लगाईं। दूसरे लोग प्राग में रुके रहे, जैसे डोरीन वॉरिनर और ट्रेवर चैडविक। विंटन ने कहा कि उनका काम बेहद अहम था।

> लिवरपूल स्ट्रीट पर उस दिन 250 परिवार बेकार इंतज़ार करते रहे।
>
> निकोलस विंटन, Mental Floss में उद्धृत

669

बच्चे ब्रिटेन पहुँचे

250

आख़िरी गाड़ी में बच्चे, जो कभी नहीं चली

1988

जिस साल ग्रेटे को स्क्रैपबुक मिली

आख़िरी रेलगाड़ी

मार्च से अगस्त 1939 तक बच्चों के समूह प्राग से हवाई जहाज़ और रेलगाड़ी से निकले। आख़िरी समूह को 1 सितंबर 1939 को निकलना था। उसी दिन जर्मनी ने पोलैंड पर हमला किया। जंग शुरू हो गई और सरहदें बंद हो गईं। लगभग 250 बच्चे नहीं निकल सके। उनमें से लगभग किसी के बचने की जानकारी नहीं है।

विंटन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के नेताओं को लिखा, बच्चों को लेने के लिए। कोई जवाब नहीं आया।

अटारी में मिली चीज़

1988 में ग्रेटे ने स्क्रैपबुक होलोकॉस्ट के एक इतिहासकार को दी। BBC के एक कार्यक्रम, *That's Life*, ने विंटन को मेहमान बुलाया। वे दर्शकों में बैठे थे। मेज़बान ने पूछा कि क्या यहाँ कोई है जिसकी ज़िंदगी निकोलस विंटन की देन है। कई लोग खड़े हो गए।

विंटन का निधन 2015 में 106 साल की उम्र में हुआ।

कब क्या हुआ

- **1938** विंटन प्राग जाते हैं और बच्चों की सूची बनाना शुरू करते हैं।
- **1939** मार्च से बच्चे प्राग से निकलते हैं। आख़िरी गाड़ी 1 सितंबर को रोक दी जाती है।
- **1988** ग्रेटे को स्क्रैपबुक मिलती है। विंटन That's Life में आते हैं।
- **2015** विंटन का 106 साल की उम्र में निधन।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

उन्होंने पचास साल किसी को नहीं बताया। उनकी अपनी पत्नी को अटारी की स्क्रैपबुक से पता चला।

वे अनेक में से एक थे। विंटन ने ख़ुद प्राग के उन लोगों के नाम लिए जिनका काम बेहद अहम था।

हमारी राय

बड़ी भलाई अक्सर नीरस काम जैसी दिखती है: सूचियाँ, फ़ॉर्म, पैसा और फ़ोन, दिन-ब-दिन।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 पहले क़दम के लिए हाँ कहिए

वे स्की की छुट्टी की योजना बना रहे थे। उन्होंने रास्ता बदला और प्राग गए।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते जब कोई मदद माँगे, तो एक छोटे पहले क़दम के लिए हाँ कहिए।

2 नीरस काम कीजिए

उन्होंने शामों और छुट्टियों में नाम लिखे, घर ढूँढे और पैसा जुटाया।

यह आज़माएँ: जिस मक़सद की आपको परवाह है, उसके लिए एक उबाऊ काम चुनिए। इस हफ़्ते कीजिए।

3 श्रेय बाँटिए

दूसरों ने प्राग में काम किया, और विंटन ने उन्हें अहम बताया।

यह आज़माएँ: उन लोगों के नाम लिखिए जो आपके साथ कोई काम बाँटते हैं। उन्हें रू-ब-रू शुक्रिया कहिए।

4 रिकॉर्ड रखिए

स्क्रैपबुक की वजह से पचास साल बाद बच्चे ढूँढे जा सके।

यह आज़माएँ: आज आपने किसी के लिए जो किया, उसे लिखिए। उसे कहीं सुरक्षित रखिए।

साथ ले जाने वाली एक बात

सबसे ज़्यादा बचाने वाले अक्सर चुप रहने वाले होते हैं।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Mental Floss
Meet Nicholas Winton, the Man Known as “Britain’s Schindler” (2017)

Holocaust Educational Trust
Holocaust Memorial Day 2016: Nicholas Winton, Our Hero, by Richard Ferrer

About Holocaust
Who was Nicholas Winton, and why did he bring 669 children from Czechoslovakia in 1938-39?

Wikipedia
Nicholas Winton

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। बच्चों की संख्या: 669 (Mental Floss, Holocaust Educational Trust, Wikipedia); About Holocaust कहता है कि ग्रेटे को मिली स्क्रैपबुक में 664 बच्चों के ब्योरे थे, और अपने शीर्षक में 669 देता है। कहानी 669 कहती है, जो बाक़ी तीन स्रोतों का आँकड़ा है। रेलगाड़ियाँ: Mental Floss कहता है कि 1 सितंबर 1939 से पहले सात गाड़ियों ने 669 बच्चों को पहुँचाया और आठवीं रोक दी गई; About Holocaust कहता है कि पहला दल 14 मार्च 1939 को हवाई जहाज़ से निकला, सात और रेल से गए, और आख़िरी 2 अगस्त 1939 को निकला; कहानी सिर्फ़ इतना कहती है कि मार्च से अगस्त 1939 तक समूह हवाई जहाज़ और रेल से निकले। आख़िरी समूह, लगभग 250 बच्चे, 1 सितंबर 1939 को निकलने वाला था (Wikipedia); Mental Floss कहता है कि माना जाता है वे मारे

गए; Wikipedia कहता है कि जंग में सिर्फ़ दो बचे; कहानी कहती है कि लगभग किसी के बचने की जानकारी नहीं है। विंटन का अपना हिस्सा: वे प्राग में लगभग तीन हफ़्ते रहे और जनवरी 1939 में लौट आए (Wikipedia); Doreen Warriner और Trevor Chadwick जैसे दूसरे लोग रुके रहे, और विंटन ने उनकी भूमिकाओं को बेहद अहम कहा (Wikipedia); कहानी यही कहती है। स्की की छुट्टी और एक दोस्त का फ़ोन Mental Floss और Wikipedia से हैं; Wikipedia Martin Blake, Marie Schmolka और Doreen Warriner को उनके नाम बताता है जिन्होंने उन्हें प्राग बुलाया। 50 पाउंड का वादा और 17 साल की सीमा Wikipedia और Mental Floss से हैं। स्क्रैपबुक ग्रेटे को मेडनहेड में अपनी अटारी में मिली (Mental Floss); That's Life का एपिसोड Holocaust Educational Trust (आधे दर्शक खड़े हुए) और Wikipedia (बाक़ी, बच्चे और पोते-पोतियाँ, फिर खड़े हुए) से है; कहानी कहती है कि कई लोग खड़े हुए। 250 परिवारों वाला उद्धरण Mental Floss से है। विंटन को नाइटहुड 2002 (About Holocaust) या 2003 (Wikipedia, 31 दिसंबर 2002 के सम्मान, जिनकी घोषणा 2003 में हुई) में मिला बताया जाता है; कहानी उसे छोड़ देती है। "अमेरिका के नेताओं को लिखा और कोई जवाब नहीं आया" Mental Floss से है। नक़्शे का निशान मेडनहेड दिखाता है, जहाँ वे रहते थे। "हमारी राय" वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।